APPENDIX IX

Some Important (doctrinal) Sentences from Gokulanāthajī's Works:

१। वस्तुतः संयोगानुभवे ह्यानंदः विप्रयोगानुभवे परमानंदः।
- P.MS. P.22.

२। श्रुतीना मत्यंतालौकिक प्रमाणत्वेन श्रुतय एव रसात्मकब्रह्मणि प्रमाणम् । - P.MS P.47

३। ब्रह्मानंदान्महानंदो भजने वर्तते। _ P.MS P.54.

४। स्वमार्गे भगवद्भजनस्यैव परमपुरुषार्थत्वं नान्यस्य। -P.MS.P.116.

५। तापाग्निज्वालात्मके (मार्गे) भजनमेव मुख्यम्। -P.MS.P.119

६। यत्र साधनानपेक्षात्वं तत्रैव पूर्णप्रमेयबलत्वं मंतव्यं भवति।
-P.MS.P.253

७। तस्मात्मार्गाचार्येषु प्रभुबुद्ध्या तेषां चरणारविंदयोः सेवनं प्रभवदेव। - P.MS.P.262

८। भगवदर्थं प्रत्यहं नूतनतरसामग्रीं विधाय श्रीमत्स्वामिनीनां भावात्मकत्वमनुभावयन् (सा) समर्पणीया। -P.MS.P.270

९। साकारत्वैकथनेन पुष्टिमार्गीय फलस्य सर्वेन्द्रियास्वादुत्वं फलानुभवप्रकार इत्युक्तं भवति। -GVS . P.1.

१०। यथा स्वर्गे देवानां पीयूषाभेव जीवनहेतुस्तथैतन्मार्गीयाणां तद्यशः (वल्लभयशः) पीयूषमेव जीवनहेतु रित्युक्तं भवति।
-GVS. P.68.

११। जीवे साक्षाद् भजनयोग्यता तदैव भवति यदि तत्र भगवद्धर्माविर्भावः। (समर्पण गद्यार्थ) - GVS P.104

१२। व्यसनभावोत्पत्तिपर्यन्तमेव साधनकृतिः अग्रे तस्य कर्तव्याभावात् कृतार्थता। - GVS - P.111

१३। यावत्सुदृढः सर्वतोधिकः स्नेहोभवति तावत् सेवादिकरणे अपराधाभावार्थं माहात्म्यज्ञानस्योपयोगः।- (पुष्टिप्रवाह मर्यादा) - GVS. P.111

१४। भक्तिमार्गस्य साक्षाद्दर्शन हेतुत्वं नतु ज्ञानमार्गवन्मनस्येवेति नियमः। GVS.141

१५। अस्मिन्मार्गे भगवदीयत्वमेव सर्वदोषानिवृत्तिहेतुः। -GVS.P.181

१६। भक्तिमार्गे पुरुषोत्तमस्यैव सेव्यत्वात् सम्बन्धमात्रेणैव सर्वेषां सर्वदोषा निवृत्तिः। - GVS.P.181

१७। भक्तिमार्गे सेव्यः पुरुषोत्तम एव नतु तदंशस्तद्विभूतिरूपं वा। - GVS. P.184

१८। साक्षात्पुष्टिमार्गीयफलस्येतरसाधनासाध्यत्वात् पुरुषोत्तम-भजनमेव साक्षात् पुष्टिमार्गीयफलसाधक(त्व)म्। GVS P.202

१९। अस्मिन् मार्गे भजनं सैवेव। - GVS.P.202

२०। सेवाकरणानंतरम् अवशिष्टकाले इतरव्यासंगाभावार्थं श्रवणम्। -GVS.P.203

२१। व्यसनं नाम तद्व्यतिरेकेण स्थातुमेव न शक्नोति। -GVS.P.206

२२। स्वस्य भगवदासक्त्या निरुपाधिस्नेहास्पदत्वेन भगवत्सेवात्मत्वं स्फुरति न तु स्वात्मनि। - GVS P.208

२३। स्वस्मिन् गोपिकाभावानुरूपभावनया सिद्धभावस्य साधनत्वमिष्टम्, अन्यद् दानव्रतादिकमपि साधनत्वे नेष्टम्। - GVS P.252

(संन्यास निर्णय)

२४। यथा विशेषिकृतक्षतनिष्पीडनकोपादीनां दुःखात्मकत्वं, तथा क्षतत्वादिधर्मसाजात्येपि संयोगरसान्तः पातित्वेन परमानंदरूपत्वं, तथा विप्रयोगरसजनितवैक्लव्यादीनामपि विप्रयोगरसात्मकत्वेन.... न तेषां दुःखत्वम्। - GVS P.253-54

२५। परमानंद विरहे जीवनानुक्तौ परमानंद गुणानामेव जीवन-संपादकत्वम्। - GVS P.258

२६। यो यस्य प्रियः स तत्कार्य सिद्धौ यदि विलम्बं सहेत तदा प्रियत्वमेव न स्यात्.....। - GVS 273

२७। तापात्मकं यद् दुःखं दृश्यते तस्य रसरूपत्वात् सुखरूपत्वमेव। - NL (Telivala edition)P.38

२८। एक नामनी महिमा इतनी है, जो जीवको पाप करिवे को सामर्थ्य नाहीं।... भगवदीय को जो लौकिक सुख है वही नर्क है। - Vac No.72 VS. Vol.II, No.3-4.

२९। पोताना दोष जाणे ते ज गुण छे । -Vac.No.75,ibid

३०। राजा युधिष्ठिर को मिथ्या बोलिवे में दोष न लाग्यो, पै भगवद्वाक्य विषे संदेह कर्यो, जो नरो वा कुंजरो वा कह्यो ताते दोष लग्यो। -Vac No.76, Ibid

३१। साक्षात्संबंध विना सर्व साधन है। - Vac No.78,ibid

३२। जो कछू करे सो पाखंड रहित निष्कपट होई सांच करे, तब जानिये महद्अनुग्रह भयो। - Vac No.86, ibid.

३३। मोटा जे मार्ग चाल्या ते मार्ग ज नान्हे चालवुं। -Vac No.96,ibid

३४। जो क्रोध है, आपको खात है। -Vac No.99, ibid

३५। केवल स्वरूप दर्शन बस नथी, विप्रयोग विना स्वाद ज नथी। - Dayārāma Library (Dabhoi) MS No. 683.

३६। जो कुंजर तें चेंटी पर्यंत सब में एक ही जीव जाननो। छोटे बडे सब जीव प्रभुके हैं। अंतर्यामी सबमें एक ही हैं और प्रतिबिंब न्यारे न्यारे दीसत हैं, यह जान के भगवदीयकु हिंसा ते अत्यंत डरयेत रहनो। - 24 Vac, No.2.

३७। क्रोध न करनो। क्रोध चाण्डाल स्वरूप है। भगवद्भाव जात रहत है। - 24 Vac No.4.

३८। वैष्णव होयके काहू को अपराध न देखें अथवा सुने नाहीं। - 24 Vac No.7

३९। सत्संग होय तो भगवद्धर्म बढ़े, नांहीं तो अन्याश्रय थाय। - 24 Vac No.19

४०। सेवा के अर्थ लौकिक कुटुम्ब को परोसी तथा राजा देशकाल सगरे दुःख सहनो। - 24 Vac No.24.

४१। जो ठाकुरजी को बालककी उपमा देत है, ताको कहा भाव? जो बालक तो सोना के मणिमाणिक के खिलौना ते न रीझो और किवाड़की सांकल खटखटाये ते रीझो। या सों नियामक कह्यो नांहीं।- VS Vol.I-3, P.3.